

# Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the 'Committee on Publication Ethics'

Online ISSN:2584-184X



## Research Article

## अंतरराष्ट्रीय संबंधों में आदर्शवादी और यथार्थवादी दृष्टिकोण का एक तुलनात्मक अध्ययन

डॉ. सुशील दत्त

सहायक प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान विभाग, राजकीय महिला महाविद्यालय गुरावडा, रेवाडी, हरियाणा, भारत

Corresponding Author: \* डॉ. सुशील दत्त

DOI: <https://doi.org/10.5281/zenodo.23452423>

### सारांश

अंतरराष्ट्रीय संबंधों के अध्ययन में दो प्रमुख सैद्धांतिक दृष्टिकोण - आदर्शवाद और यथार्थवाद हैं। ये राष्ट्रों की राजनीति को समझने के अलग-अलग तरीके बताते हैं। आदर्शवाद देशों में शांति बनाए रखना, सहयोग को बढ़ावा देना, अंतरराष्ट्रीय कानून, नैतिकता, लोकतंत्र और विश्व भर की संस्थाओं पर जोर देता है। यथार्थवाद अपने-अपने देशों की शक्ति, राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा और संघर्ष अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था को केंद्र में रखता है तथा जरूरत पड़ने पर देश अपनी सुरक्षा के लिए मजबूत सेना रखता है। इस शोध-पत्र में दोनों विचारों की उत्पत्ति, मुख्य विचार, प्रमुख विद्वानों का योगदान, उनकी सीमाओं, आपसी तुलना और दोनों के बीच के अंतर का अध्ययन करने का प्रयास किया गया है और साथ में ही ऐतिहासिक और वर्तमान घटनाओं के उदाहरण से इसको समझने का प्रयास किया गया है।

### Manuscript Information

- ISSN No: 2584-184X
- Received: 07-08-2026
- Accepted: 12-10-2026
- Published: 18-10-2026
- MRR:4(10); 2026: 159-162
- ©2026, All Rights Reserved
- Plagiarism Checked: Yes
- Peer Review Process: Yes

### How to Cite this Article

दत्त सु. अंतरराष्ट्रीय संबंधों में आदर्शवादी और यथार्थवादी दृष्टिकोण का एक तुलनात्मक अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2026;4(10):159-162.

### Access this Article Online



[www.mrrjournal.in](http://www.mrrjournal.in)

**मुख्य शब्द:** अंतरराष्ट्रीय, आदर्शवाद, यथार्थवाद, अंतरराष्ट्रीय कानून, नैतिकता, लोकतंत्र।

### प्रस्तावना

अंतरराष्ट्रीय संबंध वह शैक्षणिक विषय है जो अलग-अलग देशों के बीच राजनीतिक, आर्थिक, सैन्य, सांस्कृतिक और हर तरीके से संबंधों का अध्ययन करता है। दुनिया में लगभग 200 देश हैं और इन देशों के बीच कभी दोस्ती या कभी दुश्मनी होती रहती है, कभी व्यापार बढ़ता है तो कभी घटता है और कभी युद्ध हो जाते हैं। इन सब घटनाओं को समझने के लिए विद्वानों ने अनेक विचारधाराएँ विकसित की हैं। सभी दृष्टिकोणों में पुराने दृष्टिकोण आदर्शवादी और यथार्थवादी हैं। यह वर्तमान समय में भी सबसे अधिक प्रभावशाली और सबसे अधिक चर्चा में रहने वाले दृष्टिकोण हैं।

आज आदर्शवादी सिद्धांतों का विकास उदारवादी सिद्धांतों में हो गया है जिसे लोकतांत्रिक शांति सिद्धांत कहते हैं इसके अन्तर्गत जो लोकतांत्रिक देश हैं वो एक-दूसरे के साथ लड़ाई नहीं करते हैं। आर्थिक उदारवाद व्यापार और निवेश को शांति का साधन मानते हैं। किसी संस्था या स्थान का आदर्शवाद अंतरराष्ट्रीय या अपने या दूसरे देशों की भूमिका पर जोर देता है। मानव को दिये गए अधिकार और व्यक्तिगत निर्बंधन भी आदर्शवादी सोच के भाग हैं। ये आधुनिक रूप या नया रूप आदर्शवाद को अधिक व्यावहारिक और वैज्ञानिक बनाता है।

### आदर्शवादी दृष्टिकोण का अर्थ और विकास

आदर्शवाद अंतरराष्ट्रीय संबंधों में उस सोच को कहते हैं जो शांति, सहयोग, कानून, अंतरराष्ट्रीय संगठनों पर जोर देती है। इसे कभी-कभी आदर्शवाद व उदारवाद की संज्ञा भी दी जाती है। वुड्रो विल्सन को आदर्शवाद के सबसे बड़े विद्वान के रूप में माना जाने लगा।

नॉर्मन एंजेल ने अपनी पुस्तक द ग्रेट इल्यूजन में कहा कि युद्ध अत्यधिक रूप से हानिकारक हैं जिसके परिणामस्वरूप देशों की आर्थिक स्थिति खराब हो जाती है क्योंकि वर्तमान समय में देश एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

### मुख्य मान्यताएँ

आदर्शवाद में बहुत सी महत्वपूर्ण मान्यताएँ हैं जो कि इस प्रकार से हैं-

1. 'पहली मान्यता' यह है कि मनुष्य व्यवहार, स्वभाव से आदर्शवादी है। युद्ध और हिंसा मानव की स्वाभाविक प्रवृत्ति नहीं है अपितु गलत शिक्षा, गलत व्यवस्था, या गलत नेतृत्व का परिणाम है।
2. 'दूसरी मान्यता' यह है कि युद्ध को रोका जा सकता है। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय कानून मजबूत व कठोर करने होंगे। शस्त्रों की होड़ को रोकना होगा और विश्व में शांति स्थापित रखने के लिए विवादों का शांतिपूर्ण समाधान करना होगा।
3. 'तीसरी मान्यता' समूह की सुरक्षा की है। अगर कोई देश युद्ध करे तो सभी देश मिलकर उनका सामना करें ताकि आक्रांता राष्ट्र के मन में भय उत्पन्न हो सके जिसके कारण वह युद्ध को अंतिम विकल्प के रूप में चुनें।
4. 'चौथी मान्यता' आर्थिक सहयोग की है। व्यापार व आर्थिक निर्भरता देशों को एक-दूसरे से जोड़े रखने का कार्य करती है, जिससे युद्ध की संभावना कम हो जाती है।
5. 'पाँचवी मान्यता' राष्ट्रीय संगठन की है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व बैंक, अंतरराष्ट्रीय न्यायालय जैसी संस्थाएँ शांति का माहौल बढ़ाने में सहायता करती हैं।

### ऐतिहासिक विकास

प्रथम विश्व युद्ध के बाद आदर्शवाद का अत्यधिक विकास हुआ। आदर्शवादी दृष्टिकोण का मत था कि विदेशों के बीच युद्ध रोका जा सकता है और अमेरिकी राष्ट्रपति वुड्रो विल्सन ने विश्व में शांति स्थापित करने के लिए जनवरी 1918 में चैदह सूत्र प्रस्तुत किए। देशों के बीच खुली कूटनीति, समुद्र की स्वतंत्रता, व्यापार में बाधा कम की जाए, निरस्तीकरण किया जाए, उपनिवेशों के लोगों को आत्मनिर्णय का अधिकार मिले और इसमें राष्ट्र संघ की स्थापना भी शामिल थी। 1919 में वर्साय की संधि के बाद राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। इसका मुख्य उद्देश्य युद्धों को रोकना और देशों के विवादों का समाधान करना था। जापान ने 1931 में मंचूरिया पर हमला किया। इटली ने 1935 में इथियोपिया पर भी हमला किया। जर्मनी ने हिटलर के नेतृत्व में राइनलैंड पर कब्जा किया, ऑस्ट्रिया मिलाया और चेकोस्लोवाकिया पर भी आक्रमण किया। राष्ट्र संघ केवल निंदा प्रस्ताव पारित कर सका। शक्तिशाली देशों ने नियमों व कानूनों की पूर्ण रूप से अवहेलना कर दी। इससे आदर्शवाद पर गहरे सवाल उठे, और

### यथार्थवादी प्रभाव बढ़ने लगे।

1945 में संयुक्त राष्ट्र संघ की स्थापना हुई। संयुक्त राष्ट्र का उद्देश्य विश्व में शांति और सुरक्षा बनाए रखना था। इसके साथ मानव अधिकार, विश्व स्वास्थ्य, विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग पर भी जोर दिया। मानवाधिकार की रक्षा करना और अंतरराष्ट्रीय कानून जैसी सहयोग स्थापना हुई और इसके साथ-साथ यथार्थवादी दृष्टिकोण भी विकसित होता रहा।

### यथार्थवादी दृष्टिकोण का अर्थ और विकास

यथार्थवाद अंतरराष्ट्रीय संबंधों पर सबसे अधिक प्रभाव डालता है और व्यावहारिक सिद्धांत माना जाता है। यह शक्ति, सुरक्षा, राष्ट्र द्वारा दिए गए हित और मेहनत पर आधारित है। यथार्थवादी सोच पुराने काल या समय से चली आ रही है और वर्तमान विश्व राजनीति को समझने का प्रमुख हथियार है। जब भी कोई देश अपनी सुरक्षा जैसे हथियारों, सेना आदि को बढ़ाता है तो दूसरे देश में भी तनाव उत्पन्न होता है। इसका मुख्य कारण यह है कि वे अपने ऊपर होने वाले भविष्य के खतरों के तनाव में पड़ते हैं जिससे वे अपनी सेना तथा हथियारों में मजबूती लाते हैं।

युद्ध व संघर्ष अंतरराष्ट्रीय राजनीति का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। बिना युद्ध व संघर्ष के कोई भी दल महान या शक्तिशाली नहीं बन सकता। इनके बिना राजनीति अधूरी है। किसी भी विषय या बात पर सहयोग तभी हो सकता है जब वह विषय राष्ट्रीय हित में हो। राजनीति में मनुष्य केवल अपने स्वार्थ के लिए या अपनी शक्ति को बढ़ाने के लिए शामिल होता है।

### मुख्य मान्यताएँ

1. यथार्थवाद की पहली मान्यता यह है कि अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था हार नहीं मानती है। कोई विश्व सरकार या ऊपरी शक्ति नहीं होती है जो किसी राष्ट्र को कानून के लिए बाध्य कर सके।
2. दूसरी मान्यता यह है कि राज्य मुख्य नायक हैं। वे तर्कसंगत हैं और अपनी सुरक्षा तथा
3. शक्ति को बढ़ाने का प्रयास करता है।

4. तीसरी मान्यता राष्ट्रीय हित की है। राष्ट्रीय हित को शक्ति के रूप में बताता है और यह
5. अंतरराष्ट्रीय राजनीति में महत्वपूर्ण होता है। यह नैतिकता और कानून से भी महत्वपूर्ण है।
6. चौथी मान्यता शक्ति पर समानता है। जब शक्ति समान रूप से दी जाती है तो शांति बनी रहती है। यथार्थवादी दृष्टिकोण शक्ति संतुलन में विश्वास करता है।

### ऐतिहासिक विकास

यथार्थवाद की जड़ें ग्रीस से मिलती हैं। थ्यूसीडाइड्स ने पेलोपोनेसियन के युद्ध के बारे में बताते हुए कहा कि जिसके पास शक्ति होती है वह अपनी पूरी शक्ति का उपयोग करता है और कमजोर को दबाता है, और कमजोर व्यक्ति को दबना पड़ता है और उसे न चाहते हुए भी सब सहना पड़ता है। इसी प्रकार इटली के मैकियावेली ने अपनी पुस्तक द प्रिंस में लिखा कि किसी भी प्रतापी शासक को नैतिकता को छोड़कर राज्य की रक्षा के बारे में सबसे पहले सोचना चाहिए। इसी प्रकार अंग्रेजों के दार्शनिक थॉमस हॉब्स ने अपनी पुस्तक लेवियाथन में लिखा कि जो कानून व व्यवस्था बनाई जाती है जब वह सही प्रकार से लागू नहीं हो पाती तब लोगों के जीवन में अकेलापन और गरीबी देखने को मिलती है।

आधुनिक समय में यथार्थवाद 20वीं शताब्दी में विकसित हुआ। ई. एच. कार ने 1939 में द ट्वेंटी इयर्स क्राइसिस नामक पुस्तक लिखी। जिसमें उन्होंने आदर्शवाद का विरोध किया और कहा कि आदर्शवाद केवल नैतिकता की बातें करता है अर्थात् आदर्शवाद वास्तविक सच्चाई को नजरअंदाज करता है। हंस जे. मॉरगेन्थाऊ ने 1948 में पॉलिटिक्स अमंग नेशंस नाम पुस्तक की रचना की। उन्होंने शास्त्रीय यथार्थवाद को एक व्यवस्थित व सही रूप दिया। इनका कहना है कि राजनीतिक शक्ति को प्राप्त करने के लिए संघर्ष किया जाता है जिसे राष्ट्रीय शक्ति के रूप में परिभाषित किया जाता है।

शीत युद्ध के समय केनेथ वॉल्ट्ज़ ने संरचनात्मक यथार्थवाद और नव यथार्थवाद को काफी अच्छे से प्रस्तुत किया है। इन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था की संरचना - नियम, कानूनों और शक्ति के विभाजन तथा राज्य के व्यवहार को निर्धारित करती है।

जॉन मीयरशाइमर ने आक्रामक यथार्थवाद का सिद्धांत दिया जिसमें उन्होंने कहा कि महान शक्तियाँ केवल क्षेत्रीय प्रभुत्व हासिल करने का प्रयास करती हैं।

यथार्थवादी दृष्टिकोण का मत है कि सभी राष्ट्र अपनी सुरक्षा को लेकर हमेशा चिंतित रहते हैं, इसलिए वो शक्ति संतुलन के लिए काम करते रहते हैं। जबकि आदर्शवादी दृष्टिकोण राष्ट्रों के बीच विश्वास को स्थापित करने व लोगों के बीच आपसी सम्पर्क व सौहार्द पर विश्वास करता है।

### यूक्रेन संकट (2022 के बाद)

यथार्थवादी दृष्टिकोण रूस की सुरक्षा व चिंताओं को भी समझता है तथा यथार्थवादी दृष्टिकोण रूस की शक्ति विस्तार को भी समझता है। आदर्शवादी दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय कानून, मानवाधिकार व राष्ट्रों की संप्रभुता पर बल देता है। यूक्रेन द्वारा नाटो की सदस्यता ग्रहण करने के प्रयासों से ही रूस ने आक्रामक नीति का पालन किया तथा विश्व के सम्मुख यूक्रेन संकट उपस्थित हो गया।

### चीन का उदय और जलवायु परिवर्तन

1949 के बाद चीन ने अत्यधिक प्रगति की है जिसके कारण जलवायु परिवर्तन पर भी अत्यधिक संकट उत्पन्न हो गया। चीन द्वारा अनेक वैज्ञानिक शोध किये गये हैं जिसके कारण जलवायु संकट उत्पन्न हो गया है। यथार्थवादी दृष्टिकोण इस बात पर बल देता है कि अत्यधिक वैज्ञानिक प्रगति राष्ट्र व विश्व के लिए आवश्यक भी है परन्तु आदर्शवादी दृष्टिकोण इस बात को लेकर भी चिंतित है कि अत्यधिक वैज्ञानिक प्रगति विश्व शांति व जलवायु के लिए अत्यधिक हानिकारक साबित हो रहा है। लेकिन राष्ट्र अपने राष्ट्रीय हितों को जलवायु संकट से अधिक प्राथमिकता प्रदान करते हैं।

### भारत के संदर्भ में दोनों दृष्टिकोण

भारत की अंतरराष्ट्रीय नीति में दोनों तत्वों का मिश्रण दिखता है। गुटनिरपेक्षता में आदर्शवादी तत्व होते थे, जिसमें शांति, सहयोग, उपनिवेशवाद का विरोध और पंच शील के सिद्धांत थे लेकिन इसके साथ ही सुरक्षा चिंताओं, हथियारों और अन्य देशों के साथ संबंधों में यथार्थवादी सोच मजबूत रही। भारत ने हमेशा व्यावहारिक यथार्थवाद को अपनाया।

आज के समय में विदेशी और रणनीतिक स्वायत्तता दोनों दृष्टिकोणों को समान मानता है। भारत राष्ट्र सुधार, जलवायु परिवर्तन और विश्व के दक्षिणी देशों की आवाज उठाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद दोनों दृष्टिकोणों को अच्छे से अपनाया है।

### दोनों दृष्टिकोणों की आलोचना एवं सीमाएँ

यदि हम आदर्शवाद को ध्यानपूर्वक देखते हैं तो ज्ञात होता है कि आदर्शवाद वास्तविकता को महत्व नहीं देता है जबकि आदर्शवादी दृष्टिकोण पूर्ण रूप से कल्पनावेदी है, वह राष्ट्रों की वास्तविकता को न समझकर, केवल आशावादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है। यह दृष्टिकोण राष्ट्रहितों को नजरअंदाज करता है। विद्वानों का मत है कि विश्व कल्याण राष्ट्रहितों पर आधारित होती है। राष्ट्र अपने हितों को प्राप्त करने के लिए युद्ध को लेकर तत्पर रहते हैं। यदि हम यथार्थवादी दृष्टिकोण पर दृष्टि डालें तो यह दृष्टिकोण केवल शक्ति व राष्ट्रहितों पर ही बल देता है। इस दृष्टिकोण का मत है कि प्रत्येक राष्ट्र अपने हितों को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहते हैं। शक्तिशाली राष्ट्र नैतिकता और अंतरराष्ट्रीय कानूनों का सम्मान नहीं करते अपितु वे तो राष्ट्रहितों के नाम पर अल्पविकसित और विकासशील राष्ट्रों का शोषण करते हैं। वर्तमान समय में वे बहुराष्ट्रीय कंपनियों, सामाजिक व आर्थिक संगठनों का प्रयोग करते हैं ताकि विकासशील राष्ट्र उनकी शोषणकारी नीतियों का शिकार हो सकें। यह भी एक दृष्टिकोण है, यदि कोई राष्ट्र केवल यथार्थवादी दृष्टिकोण का ही प्रयोग करते रहेंगे तो सम्पूर्ण विश्व में युद्ध ही चलते रहेंगे और सम्पूर्ण पृथ्वी पर विनाश तय है। यह सिक्के का एक पहलू है। यदि यथार्थवादी दृष्टिकोण है तो राष्ट्रों में आपसी सहयोग स्थापित करने के लिए भी अनेक संघ या संगठन स्थापित होते रहते हैं। उदाहरण के तौर पर - राष्ट्र संघ, संयुक्त राष्ट्र संघ, विश्व व्यापार संगठन, विश्व स्वास्थ्य संगठन, अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष आदि। शक्ति संघर्ष को ही विश्व का आधारभूत तत्व मानता है। इस दृष्टिकोण का मत है कि विश्व में कभी भी विश्व सरकार का निर्माण संभव नहीं है क्योंकि प्रत्येक राष्ट्र अपने राष्ट्रहितों को प्राथमिकता देता है, न कि विश्व

कल्याण को। कोई भी राष्ट्र अपनी प्रभुसत्ता को कभी भी विश्व कल्याण के लिए त्याग नहीं सकता। आदर्शवाद राष्ट्रहित को नैतिकता के बंधन में बांधना चाहता है। जबकि यथार्थवादी दृष्टिकोण किसी राष्ट्र के लिए राष्ट्रहित को ही सर्वोपरि मानता है। इनका मत है कि राष्ट्र की नैतिकता और व्यक्ति की नैतिकता दोनों में अंतर होता है, व्यक्ति की नैतिकता से केवल एक व्यक्ति या कुछेक व्यक्तियों पर प्रभाव पड़ता है या पड़ सकता है जबकि यदि राष्ट्र नैतिकताओं की सीमाओं में बंधने लग जाएंगे तो पूरे राष्ट्र के लोगों का जीवन अंधकारमय हो सकता है, ऐसा कोई भी समझदार राष्ट्र स्वप्न में भी नहीं कर सकता।

आदर्शवादी दृष्टिकोण युद्ध को गलत समझता है। इस दृष्टिकोण का मत है कि इस युद्ध प्रवृत्ति से सम्पूर्ण विश्व को खतरा उत्पन्न हो सकता है और आधुनिक समय में परमाणु हथियारों के कारण मानव सभ्यता कभी भी समाप्त हो सकती है। जबकि यथार्थवादी दृष्टिकोण का मत है कि युद्ध के कारण शांति का निर्माण होता है जिसके कारण विश्व में शक्ति संतुलन स्थापित होता है। आदर्शवाद और यथार्थवादी दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय संबंधों के दो पहलू हैं। आदर्शवाद से हमें यह पता चलता है कि दुनिया कैसी होनी चाहिए। शांतिपूर्ण, न्यायपूर्ण और सहयोगपूर्ण। यथार्थवाद से हमें पता चलता है कि दुनिया किस प्रकार की है - शक्ति आधारित, प्रतिस्पर्धी और अनिश्चितता।

दोनों का अपना-अपना महत्व है। आदर्शवाद से हम शक्ति की कठोर वास्तविकताओं को देख नहीं सकते तथा यथार्थवाद से हम सहयोग और विकास को खो सकते हैं। इन दोनों का उपयोग संतुलन में ही किया जाना चाहिए तब ही ये लाभदायक साबित हो सकते हैं। नीति निर्माताओं को यथार्थवाद को ध्यान में रखते हुए शक्ति और सुरक्षा का भी ध्यान रखना चाहिए लेकिन आदर्शवादी मूल्यों को भी ध्यान में रखा जाना चाहिए।

आज की दुनिया में यथार्थवाद और आदर्शवाद को ध्यान में रखते हुए महाशक्ति, प्रतिस्पर्धा, जलवायु संकट और बहुधुरवीयता की समझ होनी चाहिए। यह शोध पत्र इस अध्ययन में उन सिद्धांतों पर जो क्षेत्रीय संघर्षों, आर्थिक कूट-नीति, साइबर-सुरक्षा और वैश्विक शासन के मुद्दों से जुड़े हैं उन पर लागू किया जा सकता है।

## निष्कर्ष

विद्वानों का मत है कि दोनों दृष्टिकोणों में आधारभूत असमानताएँ हैं जिसके कारण इनकी तुलना संभव है। आदर्शवादी दृष्टिकोण मनुष्य को अच्छा, सहयोगी व समन्वयकर्ता मानता है। विश्व पटल पर देशों का एक दूसरे से सहयोग करना, उनकी अच्छाई को दर्शाता है। आदर्शवादी दृष्टिकोण का मत है कि सही शिक्षण संस्थाओं से बुराई दूर की जा सकती है। इसके विपरीत यथार्थवादी दृष्टिकोण का मत है कि मनुष्य स्वार्थी, शक्तिपिपासु और संघर्षशील है तथा निरंतर शक्ति प्राप्त करने का प्रयास करता रहता है जिसके कारण देशों में युद्ध होने की प्रबल संभावना बनी रहती है।

आदर्शवादी दृष्टिकोण अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में कानून, अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं, सहयोग पर पूर्ण आस्था रखता है। यह विश्व व्यवस्था का संचालन अंतरराष्ट्रीय कानूनों व नियमों के अनुरूप करने की सिफारिश करता है तथा इसका मत है कि इन नियमों का पालन करने से ही विश्व में शांति कायम हो सकती है तथा अराजकता को कम किया जा सकता है। इसके विपरीत यथार्थवादी दृष्टिकोण अराजकता

को स्थायी मानकर विश्व में संघर्ष में वृद्धि करने का इच्छुक है तथा विश्व के नियमों व कानूनों को मानने में विश्वास नहीं करता।

अंत में यह कहा जा सकता है कि दोनों दृष्टिकोणों की आधारभूत मान्यताओं में अंतर हो सकता है परन्तु एक दृष्टिकोण कल्पना करते हुए भी विश्व कल्याण की बात करता है तथा दूसरा दृष्टिकोण राष्ट्रों को वास्तविकता से परे नहीं होने देता तथा इस बात पर बल देता है कि राष्ट्रों को वास्तविकता के धरातल पर रहकर ही कार्य करना चाहिए। राष्ट्रों को शक्ति अर्जन के साथ-साथ विश्व कल्याण या मानवता पर बल देना चाहिए।

## संदर्भ सूची

1. कैर ई.च. द ट्वेंटी इयर्स क्राइसिस, 1919-1939। लंदन: मैकमिलन; 1939।
2. मॉर्गेन्थाउ एचजे. पॉलिटिक्स अमंग नेशंस: द स्ट्रगल फॉर पावर एंड पीस। न्यूयॉर्क: अल्फ्रेड ए. नॉफ; 1948।
3. वॉल्ट्ज के.एन. थ्योरी ऑफ इंटरनेशनल पॉलिटिक्स। रीडिंग, मैसाचुसेट्स: एडिसन-वेस्ली; 1979।
4. मियर्सहाइमर जेजे. द टैजेडी ऑफ ग्रेट पावर पॉलिटिक्स। न्यूयॉर्क: डब्ल्यू. डब्ल्यू. नॉर्टन एंड कंपनी; 2001।
5. वॉल्ट एसएम. द ओरिजिन्स ऑफ अलायंसेज़। इथाका, न्यूयॉर्क: कॉर्नेल यूनिवर्सिटी प्रेस; 1987।
6. थ्यूसीडाइडस. हिस्ट्री ऑफ द पेलेपोनेशियन वॉर। (मूल ग्रंथ; प्रकाशन वर्ष और अनुवादक का विवरण प्रयुक्त संस्करण के अनुसार जोड़ा जाना चाहिए।)
7. हॉब्स टी. लेवायथन। 1651।
8. मैकियावेली एन. द प्रिंस। 1532। (मूल इतालवी ग्रंथ का प्रकाशन लेखक की मृत्यु के बाद हुआ।)
9. रोज़ जी. नव-शास्त्रीय यथार्थवाद और विदेश नीति के सिद्धांत। वर्ल्ड पॉलिटिक्स। 1998;51(1):144-172।

## Creative Commons License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution-Non-commercial-No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) License. This license permits users to copy and redistribute the material in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and the source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted.

## About the Author



**डॉ. सुशील दत्त** राजनीति विज्ञान विभाग में सहायक प्राध्यापक हैं। वे राजकीय महिला महाविद्यालय, गुरावड़ा, रेवाड़ी, हरियाणा, भारत में कार्यरत हैं। उनकी शैक्षणिक रुचि राजनीति विज्ञान, राजनीतिक सिद्धांत, भारतीय राजनीति, शासन व्यवस्था तथा समकालीन राजनीतिक मुद्दों के अध्ययन एवं अनुसंधान में है। वे शिक्षण और अकादमिक गतिविधियों में योगदान देते हैं।